थानेदार को देखकर उसकी आंखें फटी-की-फटी रह गईं।

विजय की मां ने थानेदार को अन्दर बुलाया। बैठक में मेज़ पर 'दैनिक सरे बाज़ार' का ताज़ा अंक रखा था। उसके मुखपृष्ठ पर विजय का इंटरव्यू था। साथ में नेमीशरण की फोटो भी।

विजय की मां ने पूछा, "आप किसी मुश्किल में तो नहीं पड़ गए?"

"नहीं मैडम, मैं तो विजय को लेने आया हूं। मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि सिपाही नेमीशरण की शवयात्रा राजकीय सम्मान से निकलेगी। नेमीशरण को कर्त्तव्य-परायणता का पुरस्कार मरणोपरान्त दिया गया है। उसने चालीस सालों तक निष्ठापूर्वक हज़ारों बच्चों की सुरक्षा की है। चलो विजय, तुम्हें हमारे साथ चलना है।" परगटसिंह ने पूरी बात एक ही सांस में कह डाली।

"मैं यूनिफार्म पहनकर अभी चलता हूं।" विजय के चेहरे पर संतोष का भाव था।

एलरी क्वीन द्वारा संपादित संकलन "एल ऐज़ इन लूट" की एक कहानी "ए फ्युनरल फॉर पैट्रोलमैन केमरॉन" का भावानुवाद।

सुशील जोशी: पर्यावरण एवं विज्ञान लेखन में सक्रिय, होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से संबद्ध।

ज़रा सिर तो खुजलाइए

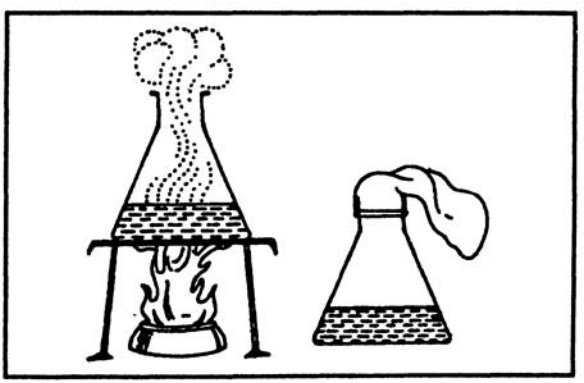

एक फ्लास्क या किसी भी संकरे मुंह के बर्तन में थोड़ा-सा पानी लेकर उसे गर्म करें। जब पानी उबलने लगे तो उसे नीचे उतार कर बर्तन के मुंह पर एक गुब्बारा फंसा दीजिए (देखिए चित्र)। और बर्तन को ठंडा होने दीजिए। देखिए क्या होता है? हमें लिख भेजिए। सही जवाबों को अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। हमारा पता है:

संदर्भ, द्वारा एकलव्य, कोठी बाज़ार, होशंगाबाद 461 001.